आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2391 • उदयपुर, रविवार 11 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्

सेवा पथ पर आपका अपना, नारायण सेवा संस्थान

खुश हुई रूकी जिंदगियां

संस्थान की ओर से रूकी हुई जिंदगियों को सक्रिय करने के लिए निःशुल्क कृत्रिम अंग माप, ऑपरेशन चयन तथा वितरण शिविर लगाये गये। शिविर में जब उन्हें चलने– फिरने व उठने – बैठने की उम्मीद नजर आई तो दिव्यांगजन खुश हो उठे।

बड़ोदरा :– अजन्ता मेरिज हॉल में सम्पन्न शिविर में 107 दिव्यांगों ने भाग लिया। जिनमें से 3 का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन हुआ। जबकि 26 के कृत्रिम अंग व 28 के लिए कैलीपर बनाने का पी.एण्ड. ओ. नेहाजी अग्निहोत्र, टेक्नीशियन भंवर सिंह जी व किशन लाल जी ने माप लिए। अतिथियों ने 15 दिव्यांगों को बैसाखी का वितरण किया। आश्रम प्रभारी जितेश जी व्यास ने बताया कि शिविर में अतिथि के रूप में समाज सेवी महेन्द्र भाई चौधरी, श्रीमती लीला जी बालचंदानी व देवेश भाई थे। शिविर श्री देवजी भाई पटेल व श्री गजेन्द्र भाई साखर के सहयोग– सौजन्य से सम्पन्न हुआ।

छतरपुर :– यहां आयोजित शिविर में 168 दिव्यांग बन्धु– बहनों ने भाग लिया। जिनमें से डॉ. आर. के. सोनी ने 27 का निःशुल्क सर्जरी के लिए चयन किया। जब कि 12 के लिए कृत्रिम हाथ–पैर व 39 का कैलीपर बनाने का माप लिया गया। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद जी लढ्ढा के अनुसार कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रोटरी प्रांतपाल के. के. श्रीवास्तव, श्रीमती कंचन अरुणराय, श्री आनन्द जी अग्रवाल, श्री रामकुमार गुप्ता व श्रीमती मंजू राय थे। शिविर संचालन में लोगर जी डांगी, मुन्ना सिंह जी व मोहन जी मीणा ने सहयोग किया।

कांगड़ा –
ज्वाला जी– कांगड़ा (हि.प्र.) में सम्पन्न शिविर में डॉ. गजेन्द्र जी शर्मा ने कुल मौजूद 108 दिव्यांगों में से 2 का सर्जरी के लिए 28 का कृत्रिम अंग के लिए व 40 का कैलीपर बनाने के लिए चयन किया। सहयोग टेक्नीशियन नरेश जी वैष्णव ने किया। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री रमेश चन्द्र जी बाला, रसील सिंह जी मन कोटिया, संजय जी जोशी, सौरव जी शर्मा व पंकज जी शर्मा थे।

पुणे – आईमाता मन्दिर कोढ़वा रोड़, पुणे (महाराष्ट्र) में संस्थान के तत्वावधान में आयोजित दिव्यांग सहायता शिविर में 18 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ– पैर व 2 को कैलीपर लगाए गए। आश्रम प्रभारी सुरेन्द्र सिंह झाला के अनुसार कार्यक्रम में विशिष्टि अतिथि सर्वश्री हीरालाल जी राठौड़, मोटाराम जी चौधरी, चम्पालाल जी कावड़िया, हर्ष वर्धन जी, हकाराम जी राठौड़, मोहन लाल जी, प्रकाश जी, कीकाराम जी, सोमाराम जी राठौड़ थे।

मकराना :– नागौर (राजस्थान) जिले के मकराना में दिव्यांग जांच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें 116 दिव्यांगजन ने भाग लिया। इनमें से डॉ. एस.एल. गुप्ता ने 237 का निःशुल्क सर्जरी के लिए चयन किया। टेक्नीशियन श्री भंवर सिंह जी ने 20 दिव्यांगों के कृत्रिम अंग व 7 के कैलीपर बनाने के लिए नाप लिए शेष दिव्यांगों को उनकी जरूरत के मुताबिक सहायक उपकरण दिए गए। मुख्य अतिथि श्री महेश जी रांदड़ थे। अध्यक्षता भारत विकास परिषद के अध्यक्ष श्री बाल मुकुन्द जी मूंदड़ा जी ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री रमेश चन्द्र जी छापरवाल, कमल किशोर जी मांधना, भंवर लाल जी गहलोत, महावीर जी प्रसाद, ओम प्रकाश जी राठी, व श्याम सुन्दर जी स्वामी थे। सहयोग संस्थान साधक सर्वश्री मुन्नासिह जी, लोगर जी डांगी व मोहन जी मीणा ने किया।

ग्रामीण दिव्यांगों के द्वार संस्थान

जयपुर में वितरित हुए कृत्रिम अंग एवं राशन किट

दिव्यांगता के क्षेत्र में अग्रणी नारायण सेवा संस्थान द्वारा हेरिटेज होटल ब्रह्मपुरी पुलिस स्टेशन के सामने, आमेर रोड़, जयपुर में कृत्रिम अंग एवं राशन वितरण शिविर आयोजित हुआ। शिविर प्रभारी मनीष जी खण्डेलवाल ने बताया कि दिव्यांगजन को ट्राईसाइकिल, व्हीलचेयर और वैशाखी, कैलिपर आदि प्रदान किये गये एवं गरीब परिवारों को निःशुल्क राशन दिया गया। शिविर में मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र जी पारीक, अध्यक्ष मंहतश्री बच्चनदास जी, विशिष्ट अतिथि श्री राघवेंद्र जी महाराज, श्री चमनगिरी जी महाराज, श्री अमर जी गुप्ता, श्री चिराग जी जैन, श्री घनश्याम जी सैनी, श्री लक्ष्मण जी समतानी, श्री चिरंजीलाल जी, श्री अशोक जी झामानी, श्री भूपेन्द्र प्रताप जी सोनी एवं कई गणमान्य मेहमान उपस्थित थे। संस्थान द्वारा नारायण गरीब परिवार राशन योजना के अंतर्गत 50 हजार परिवारों को राशन का लक्ष्य निर्धारित किया है इसके अंतर्गत 28 जरूरतमंद परिवारों को राशन किट दिये गये साथ ही दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग, कैलिपर वितरण किये। शिविर टीम में भंवरसिंह जी, हुकुमसिंह जी ने अपनी सेवाएं दी।

भीण्डर (उदयपुर) में दिव्यांग जांच चयन, उपकरण वितरण शिविर

एडीप योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को पंचायत समिति भीण्डर में निःशुल्क दिव्यांगता जाँच, चयन एवं उपकरण वितरण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में मुख्य अतिथि पंचायत समिति भीण्डर प्रधान श्रीमान हरिसिंह जी सोनिगरा, अध्यक्ष श्रीमान प्रहलाद सिंह जी, श्रीमान लक्ष्मीलाल जी आमेटा, विकास अधिकारी श्रीमान भंवरलाल जी मीणा, श्रीमान खेमराज जी मीणा ने अपने हाथों से दिव्यांगों को सहायक उपकरण भेंट किये। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि डॉ मानसरंजन जी साहु ने 45 रोगियों की जांच करते हुए 03 दिव्यांगों का ऑपरेशन के लिये चयन किया, 05 निःशक्त बंधुओं को ट्राईसाइकिल, 07 को व्हीलचेयर, 10 को वैशाखियां दी गई तथा 04 का कैलिपर्स का नाप लिया गया। शिविर में हरिप्रसाद जी लड्ढा, लोगर जी डांगी, मोहन जी मीणा, नरेन्द्र सिंह जी झाला ने भी अपनी सेवाएं दी।

ब्रेन ट्यूमर रोगी को आर्थिक मदद

नारायण सेवा संस्थान ने पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के संतोशपुर निवासी बप्पा बिस्वास (27) के ब्रेन ट्यूमर के इलाज के लिए 70 हजार रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की है। क्रिस्चियन मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पीटल, वेल्लोर में इनके ट्यूमर का जल्द ही ऑपरेशन होगा।

बप्पा के पिता परेश बिस्वास का बचपन में ही देहान्त हो गया था। परिवार के पोषण का भार बप्पा के कंधों पर आ गया। बहन की शादी भी कर्ज लेकर करवाई। तंगहाली के बावजूद जैसे–तैसे बप्पा पारिवारिक जिम्मेदारियां निभा रहा था कि उसे ब्रेन ट्यूमर की गंभीर बीमारी ने गिरफ्त में ले लिया। मात्र 7000 की मासिक आय वाले इस परिवार पर मुश्किलों का पहाड़ टूट पड़ा। ऑपरेशन करवाने जैसी आर्थिक स्थिति भी नहीं थी, कर्ज जुटाने का प्रयास भी किया लेकिन सफलता नहीं मिली।

इसी बीच टेलीविजन के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी प्राप्त हुई और बप्पा ने उदयपुर आकर संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशांत जी अग्रवाल से भेंटकी और उन्हें बीमारी और पारिवारिक हालात बताए।

अग्रवाल ने बीमारी की गंभीरता को देखते हुए संस्थान से तत्काल 70 हजार रुपए की आर्थिक मदद देते हुए वेल्लोर हॉस्पीटल में ऑपरेशन की व्यवस्था करवाई।

थैलेसीमिया से मुक्त हुआ बचपन–बुझने से बच गया दीपक

मूलतः महाराष्ट्र के वाशिम जिले के निवासी और पेशे से ट्रैक्टर चालक भास्कर प्रभाकर के घर में लम्बे इंतजार के बाद पुत्र का जन्म हुआ। पूरा परिवार बच्चे की किलकारियों से खुश हो उठा, लेकिन यह खुशी कुछ समय ही कायम रही। बच्चे दीपक को अक्सर बुखार रहता और शरीर पीला पड़ता जा रहा था। चिंतित माता–पिता ने अस्पताल में जाँच कराई तो पता चला कि वह थैलेसीमिया जैसे गंभीर रोग से ग्रस्त है और एकमात्र उपचार ऑपरेशन है। पहले ही गरीबी की मार झेल रहे भास्कर प्रभाकर के लिए ऑपरेशन के लिए पहाड़ जैसी बड़ी राशि की व्यवस्था मुश्किल ही नहीं, अपितु नामुमकिन थी। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इस त्रासदायी स्थिति से कैसे पार पाया जाये? तभी उन्हें किसी रिश्तेदार से नारायण सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा संचालित विभिन्न निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी मिली। इस पर वे तुरंत उदयपुर स्थित संस्थान में आये और अध्यक्ष श्री प्रशांत जी अग्रवाल से भेंट कर बालक दीपक के तेजी से गिरते स्वास्थ्य एवं अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के बारे में बताया। प्रशांत भैया ने उनकी समस्या सुनी और ऑपरेशन के लिए तीन लाख रुपये की सहायता प्रदान की। जिससे उसका क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, वेल्लूर में इलाज संभव हो सका।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

जब हमारी आँखें भर आई

चौपाल से चैनल तक

कौन जानता है कि 'तकदीर'..... कहां से कहां तक पहुंचा देती है... जिसने कभी बचपन में टी.वी. नहीं देखा वह आज एक नहीं 10 चैनलों पर अपने नन्हे श्रीमुख से गीतों के द्वारा घर–घर को सेवा का संदेश देती है....मीना चौहान....।

दिव्यांगता जिसके लिए अभिशाप बन गई थी, उससे मुक्त होकर दिव्यांग भाई–बहनों के लिए आत्मविश्वास एवं प्रेरणा को भर देती है.....उसकी निश्छल हंसी में आज भी .....गांव की चौपालें स्पष्ट नजर आती है .....

सन् 1983 में जन्मी मीना.....निर्धन परिवार में गरीब जरूर मगर मन के राजा उसके पिता श्री बहादुर सिंह चौहान एवं अनपढ़ माता गणेश कुंवर को मानो खुशियों का अम्बार मिल गया।

तहसील आसीन्द, भीलवाड़ा जिले के 25–30 घरों की बस्ती वाले गांव धनेरी में जब बच्ची के जन्म की बधाइयां देने सब घर आये तो उन्हें गुड़ से मीठा मुंह कराने तक भी नहीं था। एक जून की रोटी भी नसीब नहीं होने वाले परिवार पर प्रकृति के कहर की मार तब लगी जब सन् 1984 में एक वर्षीय नन्ही जान को पोलियो ने जकड़ लिया.....

कई डेरों पर जाकर मन्नते मांगी लेकिन सब बेकार।

उल्टे घर में जो दो–चार बचे–खुचे गहने थे वो भी कलियुग ने हर लिये।

गरीब पिता ने आस नहीं छोड़ी। पोलियो ग्रस्त बच्ची को देखकर जब बहादुर सिंह की पत्नी (बच्ची की माँ) रोती थी तब वे कहते थे –मुझे विश्वास है यह बच्ची हम पर बोझ नहीं बनेगी। देखना ये दिव्यांग है तो क्या हुआ ? परन्तु भगवान ने उसको समझने की ताकत कुछ ज्यादा ही दे दी है। घर के सामने चौपाल पर जब बच्चे खेलते थे तब वह घिसटते हुए जाती तो दूसरे बच्चे उसका उपहास करते थे। यह देखकर माँ–बाप अन्दर ही अन्दर जहर का घूंट पीकर रह जाते...करें तो करें कृया? पर वह अबोध बालिका अपने छोटे हाथों से आँसू पोंछती, मानो यह कहना चाहती हो कि आप चिन्ता न करें ये चौपालें मेरे लिए नहीं है तो क्या हुआ लेकिन? दूसरों के खेतों में मजदूरी करके अपनी बच्ची को पढ़ाने का संकल्प लेने वाले माता–पिता ने अपने खाने का अनाज बेचकर "एक पुरानी साईकिल खरीदी।"

दिव्यांग मीना को रोज उस पर बिठाकर उसके पिता स्कूल छोड़ने जाते नवकटार गांव....कविता बोलने का शौक था। मंच पर उसे उठा कर ले जाते.....या घिसटकर जाती तो ठीक ....कविता पाठ में हर बार प्रथम आने वाली लड़की की काबिलियत स्थानीय स्कूल के प्रधानाचार्य जी ने पहचानी। उन्होंने बहादुर सिंह जी को राय दी कि लड़की का कंठ अच्छा है आप इसे अन्यत्र ले जायें। यकायक मीना की आँखों से आँसू बहने लगे....

क्योंकि वह जानती थी कि गरीब माँ–बाप कैसे सब कर पायेंगे....बच्ची की आँखों को पौंछा। पिता ने और कहा –बेटा ! मैं तुम्हारी मुराद पूरी करूंगा.....

प्रभु का आभार मानती है मीना कि नारायण सेवा संस्थान ने आसीन्द में अपनी शाखा स्थापित की .....शाखा आसीन्द ने भी सेवा कार्य में रूचि दिखाकर उस क्षेत्र से पोलियो दिव्यांगों को उदयपुर संस्थान में निःशुल्क ऑपरेशन हेतु भेजने लगे....उनके साथ मीना भी पहुँची उदयपुर। उसका एक पैसा भी नहीं लगा एवं आनन्द के साथ 1998 में सफल ऑपरेशन हो गया वो थोड़ा चलने लगी। उसके पिता ने भी इस बीच उदयपुर में ऑटो चलाना सीख लिया।

सन् 1999 में मीना भीलवाड़ा में पढ़ने लगी उसके पिता ऑटो चलाते। वह संगीत स्कूल में जाने लगी। सभी उसके कोकिल कण्ठ को संवारते। वो अच्छा गाने लगी। लेकिन उसके मन में टीस थी कि "वह दिव्यांग बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकी।" इसलिए एक दिन पिता बहादुर जी को बोला –पापा मैं दिव्यांग भाई बहनों के लिए कुछ करना चाहती हूँ। मैं वहां पढ़ूगी एवं संस्थान में सेवाएं दूंगी। उसके पिता ने उसके मन को समझा और उसे लेकर उदयपुर आये। दिन भर पिता ऑटो चलाते और मीना दो घण्टे संस्थान में रोगी सेवाएं देने लगी एवं संगीत की ट्रेनिंग भी लेने लगी।

प्रभु ने सुनी उसकी संस्थान में पोलियो सर्जिकल शिविर के शुभारम्भ का कार्यक्रम था। उसमें गाने की इच्छा जाहिर की। 19 वर्षीय उस बालिका ने सबकी आंखों के पौर गीले कर दिये "चल–चल मेरी बैसाखी" गीत सुनाकर। प्रशान्त जी ने उसे चैनलों पर संस्थान के प्रसारित सेवा प्रवचनों के एपिसोडो में गाने को कहा। मानो यकायक उसकी मुरादें पूरी हो गयी। उसकी आंखों से खुशी के आंसू बहने लगे। उसे एक ही निगाह में आंखों के सामने गांव की चौपाल से चैनल तक के जीवन चक्र की याद ताजा हो उठी। मीना कहती है– मेरा संकल्प है कि मैं ज्यादा से ज्यादा सेवा कर दिव्यांगों में आत्मविश्वास की अलख जगाऊंगी एवं कहती है कि संस्थान ने उसके माथे से दिव्यांगता का अभिशाप मिटा दिया जो मैं भार बनी हुई थी परिवार पर लेकिन आज मैं खूश हूं कि संस्थान के कारण मैं स्वावलम्बी बनी वो भी निःशुल्क।

इतना तो मैं भी जानती हूं कि मैं स्त्री हूं और उसमें भी दिव्यांग रह जाती तो ना–बा–बा–ना सोचती हूं तो दिल कांप जाता है–याद आ जाता फिर चौपाल और चैनल।

सम्पादकीय

कहा है दया धर्म का मूल है। धर्म यानी धारण करने योग्य सद्वृत्ति दया याने करुणा का भावानुवाद। मानव में करुणा का भाव स्थायी है। वह अनुभाव, विभाव से संचरित होकर दया के रूप में प्रकट होता है। यदि हमारी करुणा–धारा सदा प्रवाहमयी है तो फिर दया का दरिया बनते देर ही क्या लगेगी? जब दया का प्राकट्य निरंतर होगा तो धार्मिकता तो उसका उपजात है ही। इसी धर्म के लिए मनुष्य को संत, हर दार्शनिक और हर उपदेशक, मार्गदर्शक चेताता रहा है। आज चेतना को चैतन्य करके, अनुभव के साथ संयोजित करके, व्यावहारिकता में उतारने की परम आवश्यकता है। धर्म की धारणा के अनेक बीज हैं उनमें दया भी प्रमुख है। दया के भाव उपजते ही करुणा धारा उत्पन्न होकर बहने लगती है। इस करुणाधारा से ईश्वरीय कार्य सधने लगते हैं। यही धर्म का आचरण होकर संसार को सुखी करने का उपक्रम बन जाता है।

कुछ काव्यमय

आदिकाल से चल रहे,
सेवा भरे प्रयास।
सेवा से पहचान है,
सेवा ही है सांस।।
चिर परिचित है कल्पना,
सेवा–सच्ची राह।
सेवा से ही चल रहा,
सुन्दर धर्म–प्रवाह।।
सेवा भी है साधना,
कहते वेद–पुराण।
सेवक प्रभु का लाड़ला,
मिलते कई प्रमाण।।
जो सेवा की राह पर,
चले करे संतोश।
खुद–ब–खुद मिट जायेंगे,
उसके सारे दोश।।
सेवा की पतवार है,
लहरों भरा उछाव।
भवसागर से तार दे,
ऐसी निर्मल नाव।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

कोरोना वायरस - बचाव ही उपचार

अच्छे कर्म करते रहें

एक समय मोची का काम करने वाले व्यक्ति को रात में भगवान ने सपना दिया और कहा कि कल सुबह मैं तुझसे मिलने तेरी दुकान पर आऊंगा।'

'मोची की दुकान काफी छोटी थी और उसकी आमदनी भी काफी सीमित थी।'

'खाना खाने के बर्तन भी थोड़े से थे।' इसके बावजूद वह अपनी जिंदगी से खुश रहता था।' एक सच्चा ईमानदार और परोपकार करने वाला इंसान था।' इसलिए ईश्वर ने उसकी परीक्षा लेने का निर्णय लिया।' मोची ने सुबह उठते ही तैयारी शुरू कर दी।' 'भगवान को चाय पिलाने के लिए दूध चायपत्ती और नाश्ते के लिए मिठाई ले आया।' 'दुकान को साफ कर वह भगवान का इंतजार करने लगा।' उस दिन सुबह से भारी बारिश हो रही थी।' 'थोड़ी देर में उसने देखा कि एक सफाई करने वाली बारिश के पानी में भीगकर ठिठुर रही है।' मोची को उसके ऊपर बड़ी दया आई और भगवान के लिए लाए गये दूध से उसको चाय बनाकर पिलाई।' दिन गुजरने लगा।' दोपहर बारह बजे एक महिला बच्चे को लेकर आई और कहा कि मेरा बच्चा भूखा है इसलिए पीने के लिए दूध चाहिए।' मोची ने सारा दूध उस बच्चे को पीने के लिए दे दिया।' इस तरह से शाम के चार बज गए।'

मोची दिन भर बड़ी बेसब्री से भगवान का इंतजार करता रहा।' तभी एक बूढ़ा आदमी जो चलने से लाचार था आया और कहा कि मै भूखा हूं और अगर कुछ खाने को मिल जाए तो बड़ी मेहरबानी होगी।' मोची ने उसकी बेबसी को समझते हुए मिठाई उसको दे दी।' इस प्रकार दिन बीत गया और रात हो गई।' रात होते ही मोची के सब्र का बांध टूट गया और वह भगवान को उलाहना देते हुए बोला कि वाह रे भगवान सुबह से रात कर दी मैंने तेरे इंतजार में।' लेकिन तू वादा करने के बाद भी नहीं आया।'

क्या मैं गरीब ही तुझे बेवकूफ बनाने के लिए मिला था।' तभी आकाशवाणी हुई और भगवान ने कहा कि मैं आज तेरे पास एक बार नहीं तीन बार आया और तीनों बार तेरी सेवाओं से बहुत खुश हुआ और तू मेरी परीक्षा में भी पास हुआ है।' क्योंकि तेरे मन में परोपकार और त्याग का भाव सामान्य मानव की सीमाओं से परे हैं।' भगवान ना जाने किस रूप में हमसे मिल ले हम नही जान पाते हैं।'अतः अच्छे कर्म करते रहें।'

सेवा का अवसर मिला

राजकोट, गुजरात निवासी श्री प्रतीक सोनी पिता श्री सतीश सोनी, उम्र 15 साल जो जन्म से ही मानसिक पक्षाघात के शिकार हैं। श्री प्रतीक सोनी ने कक्षा सात तक अध्ययन किया है। श्री सतीश सोनी का अपना सोने का व्यवसाय है वे बताते है कि –बम्बई, हैदराबाद जैसे कई महानगरों के चिकित्सालयों में इलाज कराया, परन्तु कोई सफलता नहीं मिल सकी। टी.वी. पर संस्थान की सेवाओं के बारे में जानकर उदयपुर आये और उसी दिन ऑपरेशन कर दिया गया। यहाँ के सेवा कार्य देखकर हर रोगी को परमानन्द मिल जाता है। संस्थान में सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है।

रोहताश, बिहार प्रान्त के रहने वाले श्री बिट्टु कुमार पिता श्री हरिशंकर उम्र 11 वर्ष कक्षा नवमी में अध्ययनरत हैं, को जन्म के एक वर्ष बाद बुखार में इंजेक्शन लगाने से पोलियो ने अपनी चपेट में ले लिया। मध्यम आय वर्गीय कृषक पिता श्री हरिशंकर जी ने बताया कि लुधियाना, पटना आदि शहरों के चिकित्सालयों में इलाज करवाया परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। टी.वी. के माध्यम से संस्थान के बारे में पता चला तो मन में आशा के अंकुर फुट पड़े और उदयपुर आ गये और ऑपरेशन कर दिया गया। श्री हरिशंकर जी बताते है कि इस मंदिर रूपी संस्थान में उनका कोई पैसा नहीं लगा। संस्थान के समस्त कर्मचारियों से उन्हें भरपूर प्रेम एवं स्नेह मिला।

गोविन्दपुरा गाँव, जिला भिवानी हरियाणा से आये श्री सुरेश कुमार पिता श्री राम किशन, उम्र 25 वर्ष जन्म से ही पोलियो रूपी अभिषाप झेल रहे हैं।

श्री सुरेश कुमार ने कक्षा चार तक अध्ययन किया है। पिता श्री राम किशन मध्यम आय वर्गीय कृषक है, जो बताते हैं कि सेवा संदीपन के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान रूपी सेवा मंदिर की जानकारी मिली।

आशा की किरण लिये संस्थान में आये और ऑपरेशन किया गया। वे बताते हैं कि मेरा यहाँ कोई पैसा खर्च नहीं हुआ। यह संस्थान पालियो रूपी पापों को धोकर पुण्य का कार्य कर रही है।

नारायण सेवा : प्रभु कृपा

निशा की उम्र 10 वर्ष है। पिता श्री कनुभाईगुजरात में सावरकांठा जिलान्तर्गत रमोइ गांव के निवासी है। निशा जन्म से ही पोलियो पीड़ित हैं, और चारों हाथ–पैरों के सहारे ही इधर–उधर हो पाती है। टी. वी. चैनल्स से संस्थान की जानकारी मिली, और यहां आये। निशा के पैर का ऑपरेशन हुआ। श्री कनुभाई आश्वस्त हैं, चिकित्सकों की राय के अनुरूप उन्हें निशा के अपने पैर पर खड़े होकर चलने योग्य होने के बारे में आशंका नहीं है। यहां की सभी सुविधाएँ निःशुल्क है। इन प्रयासों के पीछे ईश्वरीय शक्ति का संबल मानते हैं।

अभिषेक मित्तल (10 वर्ष) पिताश्री सतपाल मित्तल,बीकानेर (राज.)जन्मजात दिव्यांगता से पीड़ित अभिषेक का एक पांव पोलियो से ग्रस्त हो चुका था। कई शहरों में दिखाया लेकिन कहीं कोई उपचार सम्भव न हो सका। अभिषेक के मामा ने उन्हें अपने बेटे का इलाज नारायण सेवा संस्थान में करवा चुके थे, उन्हें बताया।

इस तरह वे नारायण सेवा संस्थान पहुंचे। पांव की जांच के बाद अभिषेक के पांव का निःशुल्क सफल ऑपरेशन हुआ। अभिषेक ने इस उक्ति को चरितार्थ कर दिया है कि – दुनियां उठती है, उठाने वाला चाहिये। यह नारायण सेवा संस्थान के द्वारा ही सम्भव हो सकता है।

नाम धर्मवीर, आयु – 25 वर्ष पिता–श्री हरचन्द जी, पता – भरतपुर

5 वर्ष की आयु में पोलियोग्रस्त होने से धर्मवीर विगत 20 वर्षों से घुटनों पर हाथ के सहारे बड़ी मुश्किल से थोड़ा–बहुत चल–फिर पाता था। पड़ौसी से नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली और उदयपुर आये। 2 ऑपरेशन हुए।

अब वह पैरों में स्फूर्ति अनुभव कर रहा है और कैलीपर्स की सहायता से चलना संभव हो गया हैं। संस्थान ने इसे नया जीवन दिया है। वह कहता है कि यहां निःशक्तजनों की निःशुल्क सेवा देखकर ऐसा लगता है कि भगवान स्वयं यहां विद्यमान है।

आलू के अनोखे गुण

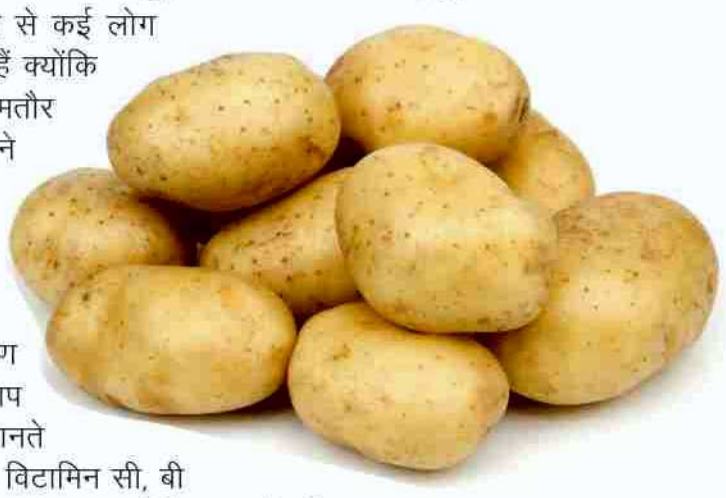

आलू को से कई लोग परहेज करते हैं क्योंकि आलू को आमतौर पर चर्बी बढ़ाने वाला माना जाता है। लेकिन आलू के कुछ ऐसे उपयोगी गुण भी हैं जिन्हें आप शायद ही जानते होंगे। आलू में विटामिन सी, बी कॉम्प्लेक्स तथा आयरन, कैल्शियम, मैंगनीज, फास्फोरस तत्व होते हैं आलू के प्रति 100 ग्राम में 1.6 प्रतिशत प्रोटीन, 22.6 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 0.1 प्रतिशत वसा, 0.4 प्रतिशत खनिज और 97 प्रतिशत कैलोरी ऊर्जा पाई जाती है।

आलू उबालने के बाद बचे पानी में एक आलू मसलकर बाल धोने से आश्चर्यजनक रूप से बाल चमकीले, मुलायम और जड़ों से मजबूत होंगे। सिर में खाज, सफेद होना व गंजापन तत्काल रुक जाता है।

जलने पर कच्चा आलू कुचलकर जले भाग पर तुरंत लगा देने से आराम मिल जाता है।

आलू को पीसकर त्वचा पर मलें। रंग गोरा हो जाएगा।

आलू के रस में नींबू रस की कुछ बूंदें मिलाकर लगाने से धब्बे हल्के हो जाते हैं।

आलू के टुकड़ों को गर्दन, कुहनियों आदि सख्त स्थानों पर रगड़ने से वहां की त्वचा साफ एवं कोमल हो जाती है।

आलू भूनकर नमक के साथ खाने से चर्बी की मात्रा में कमी होती है।

झुर्रियों से छुटकारा पाने के लिए आलू के रस में मुल्तानी मिट्टी मिलाकर झुर्रियों पर लगाएं। बीस मिनट बाद चेहरा पानी से साफ कर लें।

भुना हुआ आलू पुरानी कब्ज दूर करता है। आलू में पोटेशियम साल्ट होता है। आलू अम्लपित्त को रोकता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

करुणा के सागर नि:शक्तों के आधार - कैलाश जी मानव

जीवन बड़ा अनमोल होता है और हर व्यक्ति को अपने जीवन से प्यार होता है, हर मनुष्य की भावना होती है कि वह अपने जीवनकाल में कुछ न कुछ ऐसा काम करे, जिससे दूसरों का हित हो और स्वयं को खुशी मिले। इसी खुशी को पाने के लिए हजारों वर्षों से मनुष्य अलग–अलग तरह से प्रयास करता आया है, परन्तु उस मनुष्य को अवश्य खुशी मिली जिसने अपने तन–मन और धन से मोह नहीं किया। एक सिपाही जो अपना पारिवारिक सुख छोड़ कर पत्नी व बच्चों को भूल कर मातृभूमि की रक्षा के लिये सीमा पर दुश्मनों का सामना करने जाता है। सीमा पर जाकर अपने परिवार के साथ आराम से रहने के सुख के बारे में भी नहीं सोचता है।

उसको उसमें खुशी नहीं मिलती, उसको खुशी मिलती है तब जबकी वह अपनी जान खतरे में डालकर दुश्मनों से मुकाबला करके युद्ध जीत जाता है और हजारों लाखों परिवारों को सुरक्षा की खुशी देता है। यह खुशी उसकी अन्तर आत्मा को परम शान्ति पहुँचाती है।

ऐसी ही परम शान्ति एवं संतोष पाने के लिए हमारे प्रेरक कैलाश 'मानव' साहब ने अपना सम्पूर्ण जीवन लोकहित में, सेवा कार्य में, मासूमों दीन–दुखियों एवं अपाहिजों के आँसुओं को पौंछने के लिए समर्पित कर दिया और जब से उन्होंने यह बीड़ा उठाया कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज उनके साथ भी ऐसी ही स्थिति बन गई है जैसी एक सीमा के सिपाही के साथ होती है। सिपाही को जैसे ही रण का बुलावा आता है, वह उसी क्षण चला जाता है उसी तरह मानव सा. को भी कहीं भी किसी दुःखी की करुणा पुकार सुनाई पड़ती है तो वह तत्काल उसके कष्ट को दूर करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। वो कहते हैं।

मेरी प्रभु से यही विनती हे कि मुझे इतनी शक्ति प्रदान करें कि मैं कभी अपने लक्ष्य से न भटकूं और हर दिव्यांग को सकलांग बनाने में मैं अपने व्यक्तिगत सुख को त्याग उसको सुखी बना सकूं।

— ओ.पी.वर्मा

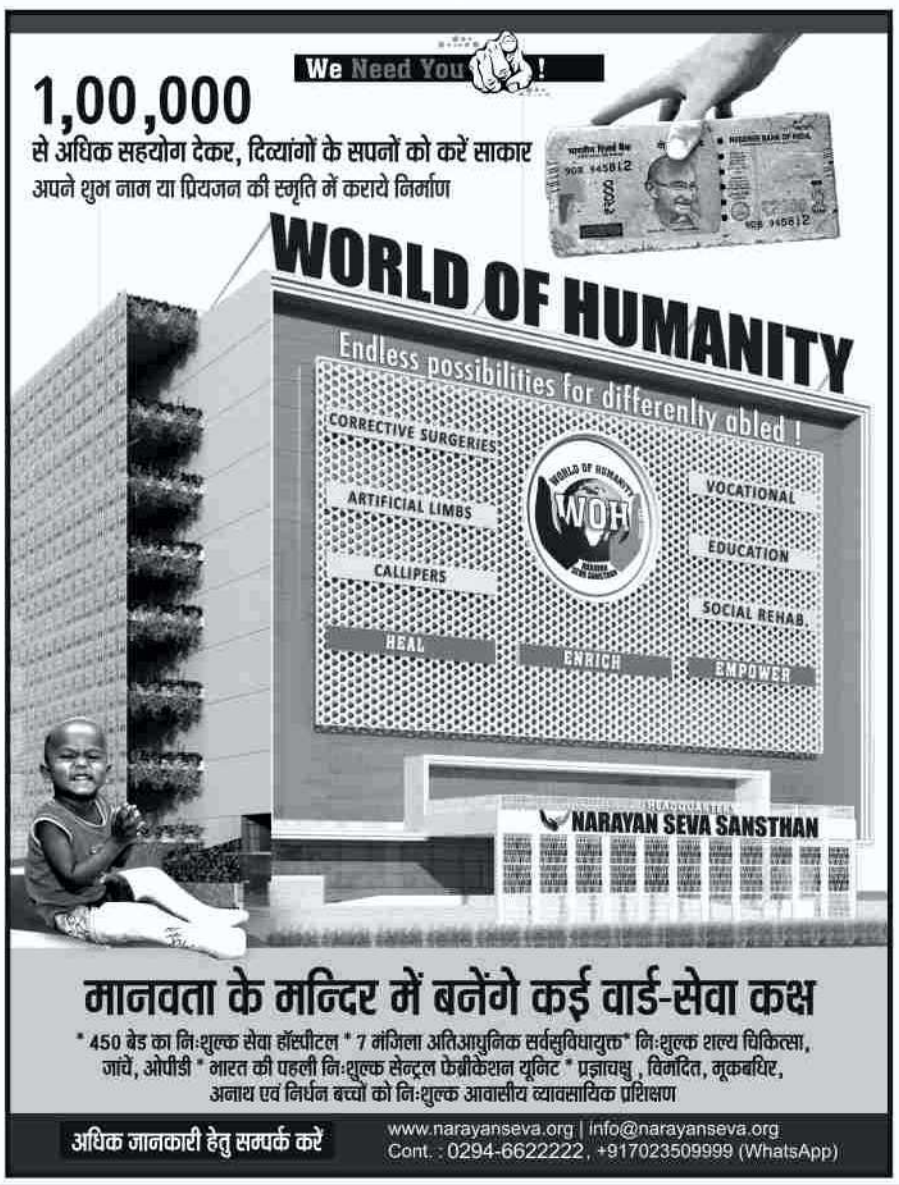

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष

* 450 बेड का नि:शुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* नि:शुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली नि:शुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को नि:शुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023